

National Horticulture Board

Project Title : Promotion of Protected cultivation with Drip and Mulching on High value Horticulture crops through two days seminar cum workshop.

Sanctioned Year : NHB/General/Scheme-3/DKVAAS,Bhopal(M.P.)/2018-2019/4573 dated 1.10.2018

Component of the Project:

- Indigenous Design of Naturally ventilated Greenhouse, semi-climate controlled greenhouse, insect proof net house and nursery.
- Design of drip irrigation & fertigation systems for protected Cultivation.
- IPM & GAP protocols development for protected cultivation technology. Production technology demonstrated through this workshop, training to attain technical know-how from the scientist associated with protected cultivation technology.
- Promoting package of practices developed for GAP and IPM, Fertigation and drip irrigation techniques and protected cultivation of various crops.
- Promoting mulching and drip for conserving soil water and fertilizer consumption.
- Promoting schemes through NHB to the farming community.

Total number of stakeholders covered: 45 Stakeholders

Topic Covered

Protected Cultivation – Greenhouse & Shade net House :

Greenhouse is framed structures covered with UV stabilized plastic films in which crops are grown under partially or controlled environment conditions.



Advantages

- Moderates temperature & humidity.
- Plant propagation is effective.
- Helps to improve quality and quantity of produce.
- Reduces infestation of disease / pests.
- Savings in water & fertilizer requirements as compared to open field cultivation.
- Reduces gestation period of the crop.

Plastic Tunnels: These are miniature structures producing greenhouse like effect. Facilitates the entrapment of carbon di-oxide thereby enhancing the photosynthetic activity. It protects plants from harsh climatic conditions such as rain, wind, hail snow etc. These are mainly used for raising nursery.



Advantages

- Protects from hostile climate.
- Helps in early seed germination.
- Round the year cultivation is possible.
- Healthy saplings can be raised

Plastic Mulching – Insitu Moisture Conservation : Plastic Mulching is covering the soil around the plant with plastic film to conserve the soil moisture that prevents weed growth and regulate soil temperature. Presently there different colour plastic films used as mulches such as black, silver-black, red, yellow, while-black etc.



Advantages

- Prevents weed growth and acts as barrier to soil pathogens.
- Accelerates uptake of micro nutrients from the soil by the active root zone.
- Conserves soil moisture thereby reduces the irrigation water requirement of the crop. Enhances quality of the produce with cleaner crop.

Walk in Tunnels: Walk-in tunnels structure is covers with UV film, suitable for all types of crops; flowers and vegetables.

- Designed to withstand wind up to 120km/hr, and trellising loads up to 25 kg/m².
- Structure gable configuration can be 8 or 10 meters wide.
- Height reaches 4.10m (2" pipe) for 8m, and 4.50m (3" pipe) for 10m.
- Option for vertical curtains (2m long) on tunnels side walls.
- 2 or 3 meter height.



News Coverage

कृषक दूत

भोपाल 27 नवम्बर से 03 दिसम्बर 2018

संरक्षित खेती पर दो दिवसीय सेमीनार का आयोजन

रायसेन। दीनदयाल कृषि विकास एवं अनुसंधान समिति, भोपाल द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा प्रायोजित प्रौद्योगिकी जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत दो दिवसीय सेमीनार का आयोजन गत 19-20 नवंबर को किया गया, जिसमें जिले भर के 40 कृषकों ने भाग लिया। केन्द्र के प्रभारी डॉ. स्वप्निल दुबे ने कृषकों को सलाह दी कि संरक्षित खेती की उन्नत तकनीक को ज्यादा से ज्यादा अपनाएं जिससे खेती लाभ का धंधा बन सके। खेती के विभिन्न घटकों जैसे ड्रिप सिंचाई, मल्लिचंग, पालीहाउस, शेडनेट हाऊस की उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

केन्द्र के वैज्ञानिक रंजीत सिंह राघव द्वारा मिट्टी की जांच, बीजोपचार के तरीके एवं जैविक खेती के महत्व के बारे में बताया गया। साथ ही औषधीय एवं सुगंधित खेती में पोषक तत्वों के प्रबंधन से अवगत कराया गया। डॉ. अशुमान गुप्ता द्वारा फलों एवं सब्जियों में कटाई उपरांत प्रबंधन एवं संरक्षित खेती की मुख्य तकनीकों का उपयोग कर जैविक एवं अजैविक कारकों से फसल को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है, बताया गया। साथ ही राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की योजनाओं से कृषकों को अवगत कराया गया। सुनील केथवास ने पानी का उपयोग कर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीक बताई। किसानों को बताया गया कि पौध रोपण



एवं टपक सिंचाई पद्धति का प्रयोग कर कम से कम क्षेत्रफल में भी लाभ प्राप्त किया जा सकता है। परम्परागत खेती के अलावा उद्योगिकी के अन्तर्गत फल-बगीचा, फूलों की खेती, ड्रिप व मल्लिचंग तकनीक पर सब्जियों की खेती करने से ही खेती को लाभकारी बनाया जा सकता है। जिसमें 40 प्रतिशत तक सब्जी उत्पादन में वृद्धि प्राप्त की जा सकती है और फल सब्जी प्रसंस्करण प्रणालियों पर भी विस्तृत जानकारी दी गई।

अरुणा सोमकुंवर एवं रंजीत सिंह राघव द्वारा कार्यक्रम के दौरान पालीहाउस, शेडनेट हाऊस एवं मल्लिचंग का भ्रमण कराया गया और उनके निर्माण में रखी जाने वाली सावधानियों एवं उपयोगिता के बारे में बताया गया कि कैसे हम फल-फूल एवं सब्जियों का अच्छा उत्पादन पालीहाउस, शेडनेट हाऊस एवं मल्लिचंग से प्राप्त कर सकते हैं। जिसमें ड्रिप द्वारा 70 प्रतिशत पानी की बचत, खाद की 35 प्रतिशत तक बचत की जा सकती है साथ ही उत्पादन में 60 प्रतिशत तक वृद्धि प्राप्त की

जा सकती है। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदीप कुमार द्विवेदी द्वारा फलों, सब्जियों एवं औषधीय फसलों में कीट रोग नियंत्रण पर विस्तृत जानकारी एवं बगीचा स्थापना पर भी तकनीकी जानकारी प्रदान की गई एवं इस दौरान कृषकों की समस्याओं का मौके पर समाधान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन के पंकज भार्गव, राजकुमार माकोड़े, रोहित साहू का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के समापन पर डॉ. अशुमान गुप्ता द्वारा कृषकों से राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड से जुड़ने की सलाह दी गई एवं इस कार्यक्रम के लिये राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड का धन्यवाद किया।

Programme Photographs





